Chishtiyya

The Chishtiyya is the first sufi order of India. It was a branch of 'Ba-shar'. This sufi order is very famous in India. Their spiritual centers spread over India, Pakistan and Bangladesh. The name of Abu Ishaq Shami Chishti(died in 940 AD) and his disciple Abu Ahmed And al Chist (874-965 AD) is taken as the proponents of this Sufi Order. The foundation of this order was done in the city called Chist in Afghanistan. This city is located near Herat.

The Foundation

The founder of this Sufi silsila in India was Khawaja Muinuddin Chrsti who is believed to have come to India with Muhammad Ghori in 1192 AD. He established the Chishti tradition over here. The main center of their activities was Ajmer. They are also called 'Garib Nawaz'. Chisti silsila flourished at other centers as well

like Narnaul, Hansi, Surber, Badayun and Nagaur. Other famous Chishti Saints were, 'Baba Ferid,'Qutabuddin Bakhtiyar Kaki 'and' Sheikh Burhan ud din Garib. Khwaja Bakhtiyar Kaki was the contemporary of Sultan Iltutmish. He declared Farid as his successor.

Famous Sufi Saints

The famous Saint Baba Farid was affectionate more to the people of the lower category. The Silsila that he followed was tolerant to everyone and welcomed whosoever needed to come to it. Many of his compositions are also included in 'Guru Bharth Sahib'. Baba Ferid is considered to be the son-in-law of Sultan Giasuddin Balban. His two important disciples were Hazrat Nizamuddin Auliya, and Hazrat Allauddin Sabir. Sheikh Nizamuddin Auliya saw the tenure of seven sultans, but they were not affiliated with any one them. Sheikh Nizamuddin Auliya was given the title of 'Mahboon-i-Ilahi' and

'Sultan-al-Auliya'. His major disciples were Sheikh Salim Chisti. Khwaji Muninuddin Chisti gave the title of 'Sultan-i-Tarakin' to Hamiduddin Nagauri. Sufi Saints of this Silsila had maintained a distance from politics and believed in living a normal life. According to them, even without any wealth anyone could be helped by the grace of God.

चिश्ती सम्प्रदाय

चिश्ती सम्प्रदाय भारत का सबसे प्राचीन सिलसिला है। यह 'बा-शर सिलसिला' की एक शाखा था। भारत में यह सम्प्रदाय सबसे अधिक प्रसिद्ध है। इनके आध्यात्मिक केन्द्र भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में फैले हुए हैं। ख़्वाजा अबू ईसहाक़ सामी चिश्ती (मृत्यु 940 ई.) या उनके शिष्य ख़्वाजा अबू अहमद अब्दाल चिश्त (874-965 ई.) का नाम इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक के रूप में लिया जाता है। अफ़ग़ानिस्तान के 'चिश्त' नामक नगर में इस सम्प्रदाय की नींव रखी गई थी। यह नगर हेरात के निकट हरी-रोद के घाट पर स्थित है।

<u>स्थापना</u>

1192 ई. में मुहम्मद ग़ोरी के साथ ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भारत आये थे। उन्होंने यहाँ ‘चिश्तिया परम्परा’ की स्थापना की। उनकी गतिविधियों का मुख्य केन्द्र अजमेर था। इन्हें 'गरीब नवाज' भी कहा जाता है। साथ ही अन्य केन्द्र नारनौल, हांसी, सरबर, बदायूँ तथा नागौर थे। कुछ अन्य सूफ़ी सन्तों में 'बाबा फ़रीद, 'बख्तियार काकी' एवं 'शेख़ बुरहानुद्दीन ग़रीब' थे। ख्वाजा

बख्तियार काकी, इल्तुतमिश के समकालीन थे। उन्होंने फ़रीद को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।

प्रसिद्ध संत

बाबा फ़रीद का निम्न वर्ग के लोगों से अधिक लगाव था। उनकी अनेक रचनायें 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी शामिल हैं। बाबा फ़रीद को ग़यासुद्दीन बलबन का दामाद माना जाता है। उनके दो महत्त्वपूर्ण शिष्य हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया एवं हज़रत अलाउद्दीन साबिर थे। शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया ने सात सुल्तानों का कार्यकाल देखा था, परन्तु वे किसी के दरबार से सम्बद्ध नहीं रहे। शेख़ निज़ामुद्दीन औलिया को 'महबूब-ए-इलाही' और 'सुल्तान-उल-औलिया' की उपाधियाँ दी गयी थीं। उनके प्रमुख शिष्य शेख सलीम चिश्ती थे। ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने हमीदुद्दीन नागौरी को 'सुल्तान-ए-तारकीन' की उपाधि प्रदान की थी। इस सम्प्रदाय के सूफ़ी संत राजनीति से दूरी बनाए रखते थे और सामान्य जीवन जीने में यकीन रखते थे। इनके अनुसार बिना धन दौलत के भी दूसरों की सहायता की जा सकती थी।